द्वितीय अध्याय

हिन्दी के पौराणिक नाटकों के विकास की रूपरेखा --

हिन्दी साहित्य में नाट्य-साहित्य का अनन्य साधारण महत्व है। इस नाट्य साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है, कि पौराणिक साहित्य का प्रभाव हिन्दी तथा अन्य भाषिक साहित्यकारोंपर पडा है। पौराणिक कथाएँ हमारे अतीत गौरव की प्रेरणामयी गाथाएँ है। ' ऐतिहासिक दृष्टि से पुराण अमूल्य निधि है और भारतीय इतिहास, सभ्यता, संस्कृति की दृष्टि से पुराणों का बडा महत्व है।' [१]

पुराण शब्द का अर्थ है पुराना। अमरकोष में पुराण शब्द के लिए एक स्थान पर ' पुराभवम् यद्वा पुरा अपि नवम्, यद्वा पुरा अतीतानागते अर्थौ अणाति ' कहा गया है।' [२] अर्थात् जो पूर्व में होकर भी नया अथवा भूत-भविष्य के अर्थों को पहले ही कह देनेवाला। पद्मपुराण में भी यही स्वीकार किया गया है -- ' पुरा परंपरा वक्ति पुराणं तेन वै स्मृतम्। देवर्षि सनाढय ने भी ' पुराण ' शब्द का यही अर्थ स्वीकार किया है -- ' पुराण वेद - उपनिषदों के सूक्ष्म ज्ञान को कथा, उपाख्यान, दृष्टान्त और उदाहरण देकर समझाने वाला साहित्य है।' [३]

निरुक्तकार यास्क ने ' पुराण ' शब्द की व्याख्या
' पुराणं कस्मात् पुरा नवं भवति।' [४]

---

१ डॉ. हरिवंशलाल शर्मा - सूर और उनका साहित्य - पृ.१६९।

२ अमरकोष - तृतीय काण्ड - पृ.६५।

३ डॉ. देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.७।

४ निरुक्त — ३।१९।२४

अर्थात जिसमें पुराना नया हो जाए, वही ` पुराण ` है । प्राचीन ग्रंथों में ` पुराण ` और ` इतिहास ' शब्द एक साथ प्राय: मिलते हैं । ` इतिहासपुराणं पंचम् वेदानां वेदम् ।' [१]

देवर्षि सनाढय का कथन है --' इतिहास की घटनाओं, रीतिओं, कहानियों को नया करनेवाला ` पुराण ` नहीं, वह वेद के सिध्दांतों की नई व्याख्या है । आज ` पुराण ' शब्द से यही तात्पर्य समझा जाता है । पुराण - वेद, उपनिषदों के सूक्ष्म ज्ञान की कथा,उपाख्यान दृष्टांत और उदाहरण देकर समझानेवाला साहित्य ।' [२]

पुराणों का मूलस्त्रोत वैदिक साहित्य है । वैसे ही ब्राह्मण और उपनिषद भी हैं । उसका अपना एक इतिहास भी है । ` पुराण साहित्य का भारतीय वाङ्.मय में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है, उनका एक अपना इतिहास है ।' [३]

पुराणोंकी संख्या और उनका विषय --

पुराणोंकी संख्या अठारह है । ` पुराणों की संख्या भारतीय साहित्य में परम्परागत निश्चित रूप से चली आ रही है, जो हैं अठारह ।' [४]

१ ब्रह्म	२ पद्म
३ विष्णु	४ वायु अथवा शिव
५ भागवत	६ नारद
७ मार्कण्डेय	८ अग्नि
९ भविष्य	१० ब्रह्मवैवर्त
११ लिंग	१२ वाराह
१३ स्कन्द	१४ वामन

---

१ छान्दोग्य उपनिषद ७ । १ । १

२ डॉ.देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.७

३ सं.हनुमान प्रसाद पोद्दार - कल्याण - जनवरी १९५४,पृ.९ ।

४ वही वही पृ.१० ।

१५ कूर्म — १६ मत्स्य
१७ गरूड — १८ ब्रह्माण्ड

पुराणों के नाम से ही उनके विषयका आभास मिल जाता है । ' विद्वानों के मतानुसार सभी पुराणों में ब्रह्म के नाना रूपों की कल्पना करके उनके अवतारों की चर्चा की गई है । उनकी कथाओं और माहात्म्य से पुराण भरे पडे हैं ।'[१]

' पुराणों के समान ही जिन ग्रंथों ने हिन्दु सभ्यता,संस्कृति और साहित्य को प्रभावित किया है,उनमें रामायण' ,' महाभारत' मुख्य हैं'। ' पुराणों से भी अधिक भारतीय जनता में इन ग्रंथों का प्रचार है ।' महाभारत' तो आधे से अधिक भारतीय साहित्य का जनक है ।'[२]

हिन्दी के पौराणिक नाटकोंका वर्गीकरण --

डॉ.नगेन्द्र ने आधुनिक नाटक का वर्गीकरण करते हुए नाटकों का एक वर्ग पौराणिक',' नैतिक' माना है । किंतु इसका विशद एवं स्पष्ट विवेचन नहीं किया है ।'[3] पौराणिक नाटकों के तीन भाग किए ।

१ रामचरित ।
२ कृष्णाचरित ।
३ सन्तचरित ।

डॉ.सोमनाथ गुप्त का वर्गीकरण कुछ युक्तियुक्त है । उन्होंने इसके उपर्युक्त तीन भाग किए है ।

१ रामचरित धारा
२ कृष्णाचरित धारा

---

१ हरिवंशलाल शर्मा - सूर और उनका साहित्य - पृ.१६६ ।
२ डॉ.देवर्षि सनाढ्य - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.१९ ।
३ डॉ.नगेंद्र - आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ.४७ ।

३ अन्य पौराणिक आख्यानों और पात्रोंसे सम्बन्ध रखनेवाली धारा ।

उपर्युक्त विवेचन के उपरांत पौराणिक नाटकों को चार धाराओं में विभाजित किया जा सकता है ।

१) कथ्य के आधारपर वर्गीकरण --

१ पुराण धारा
२ महाभारत धारा
३ रामायण धारा
४ कृष्ण धारा ।

पुराण धारा' में केवल उन्हीं नाटकोंको गृहीत किया है जिनका मुख्य आधार प्रसिध्द पुराण है । ' महाभारत धारा' में कौरव पांडवों की कथा के साथ साथ अन्य कथाओं पर आधारित नाटक सन्निविष्ट किए गये है । रामायण धारा में राम कथा के साथ अवान्तर कथाओं पर आधारित नाटक भी एकत्रित गये हैं ।

कृष्ण धारा में श्रीकृष्ण के चरित्र से सम्बध्द नाटक मुख्यरूप से स्थान प्राप्त कर सके है ।

२) काल के अनुरूप वर्गीकरण --

काल के अनुरूप नाटकोंका वर्गीकरण करते समय वही हिन्दी नाटकोंका जो सर्वसम्मत वर्गीकरण है । जिसे विद्वानों ने स्वीकार किया है ।

आचार्य शुक्ल ने ' हिन्दी नाटक के विकास क्रम के तीन उत्थान माने हैं । इन्हें भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग का नाम दिया गया ।'[१] वह वर्गीकरण इस प्रकार से है ---

---

१ आ. रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास - पृ . .

१. भारतेंदु पूर्व युगीन नाटक

२.भारतेंदु युगीन नाटक

३.प्रसाद युगीन नाटक

४.प्रसादोत्तर युगीन नाटक

इसी वर्गीकरण के आधारपर पौराणिक नाटकोंका काल के अनुरूप वर्गीकरण कर सक्ते हैं ।

१ पूर्व भारतेंदु युगीन पौराणिक नाटक

२ भारतेंदु युगीन पौराणिक नाटक

३ प्रसाद युगीन पौराणिक नाटक

४ प्रसादोत्तर युगीन पौराणिक नाटक ।

उपर्युक्त दोनों वर्गीकरण के आधारपर अब हिन्दी के पौराणिक नाटकोंकी विकासात्मक रूपरेखा देखेंगे ।

१ - पूर्व भारतेंदु युगीन पौराणिक नाटक --

हिन्दी नाट्य-साहित्य के इस युग में पौराणिक नाटकोंका निर्माण प्रचुर मात्रा में हुआ । ` हिन्दी नाट्य-साहित्य के प्रारंभिक काल में अधिकांश पौराणिक नाटक श्रध्दा एवं भक्ति से प्रेरित होकर लिखे गये हैं ।' [१]

इस काल में लिखे गये काव्य नाटकों में कवि हृदयराम कृत ` हनुमन्नाटक' बनारसीदास लिखित ` समयसार', महाराज जसवंत सिंह कृत ` आनन्द रघुनन्दन' इत्यादि रचनायें विशेष उल्लेखनीय हैं । इस समय अनुवादित नाटकों की स्वतंत्र धारा प्रवाहित थी । जिसमें राजा लक्ष्मणसिंह कृत ` शकुन्तला' सैय्यद आगा हश्र लिखित ` इन्दर सभा' सर्वश्रुत है ।

---

१ देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.२२ ।

पूर्व भारतेंदु युग के नाटकों में संस्कृत नाट्य परम्परा के अनुसरण से मंगला-चरण, नांदी आदि का प्रयोग दृष्टिगत होता है । ' इस प्रकार के पद्य-बध्द नाटकोंकी परम्परा १९वी शती तक चलती रही । इनमें कविता की अत्यधिक प्रधानता है और नाटकीय तत्वोंका अपेक्षाकृत अभाव है । '[१]

साधारण तौरपर आधुनिक हिन्दी नाटकों का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चन्द्र से माना जाता है । ' हिन्दी भाषा में जो सबसे पहला नाटक खेला गया वह ' जानकी मंगल ' था । स्वर्गवासी बाबू ऐश्वर्य नारायण सिंह के प्रयत्न से (सन् १८६२) में बनारस में खेला गया । '[२] किंतु नये अनुसंधान के अनुसार प्रमाण मिले हैं कि इनसे पूर्व भी मराठी के आद्य नाटक कार श्री. विष्णुदास अमृत भावे ने वाराणसी, कोल्हापुर में नाटक खेले थे ।

२ - भारतेन्दु युगीन पौराणिक नाटक --

भारतेन्दु युगीन नाटकोंका वास्तविक विकास भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र प्रणीत नाटकोंसे होता है । इस युग में भारतीय परम्परा से युक्त श्रध्दा, धार्मिक विश्वास के साथ साथ राजनीतिक, सामाजिक विषयोंपर पौराणिक नाटक लिखे गये । इस युग में अनुवादित, रूपांतरित तथा मौलिक नाटकोंकी विपुल मात्रा में निर्मिति हुई है । स्वयं भारतेंदु ने सभी शैलियों में नाटक लिखे । उनके नाटकों में कविता की प्रधानता हैं ।

इस युगीन नाटकों का उद्देश्य समाज सुधार, और परिष्कार । पात्रों की योजना की दृष्टि से इस काल का नाटक महत्वपूर्ण है । नाटक जन-जीवन के बहुत समीप गया ।

---

१ शिवकुमार शर्मा - हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - पृ.५४८ ।

२ डॉ. सोमनाथ गुप्त - हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास - पृ.३८ ।

इस युग में भारतेन्दु लिखित 'सत्य हरिश्चन्द्र ', 'चंद्रावली' नाटक, देवकीनंदन त्रिपाठी कृत 'सीताहरण' ,कन्हैयालाल लिखित 'अंजना सुन्दरी ' इत्यादि विशेष प्रसिध्द है ।

भारतेन्दु युगीन समस्त पौराणिक नाटकोंका कथास्त्रोत के आधारपर वर्गीकरण करेंगे ।

१) <u>भारतेन्दु युगीन पुराणधाराके पौराणिक नाटक</u> --

भारत में १८ पुराण तथा ५४ उपपुराणों में से प्रसिध्द राजा हरिश्चन्द्र,वेन्न,शिवपार्वती,च्यवन कुमारी,सगर इत्यादि पौराणिक कथाओंका आधार बनाया गया है । 'पौराणिक नाटक धारा का श्रीगणेश भारतेन्दु के द्वारा 'चंद्रावली' से हुआ था ।'[१]

भारतेन्दु ने इसमें चंद्रावली के कृष्ण के प्रति प्रेम का चित्रण किया है । इस नाटक का मूलस्त्रोत श्रीमद्भागत में मिलता है । इसकी कथा कवि कल्पित है । 'सत्य हरिश्चंद्र ' भारतेन्दु का सबसे विख्यात नाटक है । डॉ.ओझा इसे सबसे प्रौढ और उत्तम कृति मानते है ।'[२]

राजा हरिश्चंद्र के कथानकको लेकर लिखा गया ब्रजनन्दन शर्मा का 'सत्याग्रही ' इस विषय का दूसरा नाटक है । बालकृष्ण भट्ट लिखित 'वेणुसंहार' एक संक्षिप्त नाटक है । यह तीन अंकों में विभाजित है । पं.बदरीनाथ भट्ट लिखित दूसरा नाटक ' वेन चरित ' है । रामगुलाम रसिक बिहारी के ' सती सुलोचना' रामचंद्र भारद्वाज का 'आदर्श कुमारी' सुदर्शन का 'अंजना' ,उमाशंकर मेहता का 'अंजना सुंदरी ' इस नाटक की कथावस्तु का मूल आधार पद्मपुराण की हनुमान कथा है । श्री राजारामशास्त्री के 'सुकन्या' और 'देवहुति' आदि नाटकों की कथावस्तु का आधार पुराण है ।

---

१ डॉ.सोमनाथ गुप्त - हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास - पृ.६२ ।

२ दशरथ ओझा - हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास - पृ.२१२ ।

२)   भारतेन्दु कालीन रामायण धारा के पौराणिक नाटक --

पुराण साहित्य में वाल्मिकीय रामायण का अपना विशिष्ठ स्थान है। प्राचीन काल से रामायण और महाभारत कवियों तथा नाटककारों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं।

रामायण के आख्यानों पर आधारित श्री गिरिधर वकील लिखित 'रामायण यात्रा गमन' नाटक, बद्रीनारायण प्रेमधन लिखित प्रयाग रामगमन, पं.नारायण प्रसाद बेताब कृत 'रामायण' नाटक, सीताहरण और रामलीला ये दोनों नाटक देवकीनंदन त्रिपाठी ने लिखे थे। इन नाटकों का साहित्यिक मूल्य अपेक्षाकृत कम है, रंगमंचीय अधिक है। 'रामाभिषेक' नाटक रामगोपाल विद्यान्त लिखा थे। रामकथा को लेकर इसकी रचना हुई है और रामभिषेक पर इसकी समाप्ति होगई है। 'सीता - वनवास और रामलीला रामायण' ये दोनों नाटक ज्वालाप्रसाद मिश्र ने लिखे थे। 'रामलीला रामायण' तो रामायण का लीलापयोगी नाटकीकरण है। भाषा और कथावस्तु योजना दोनों शिथिल हैं।[१]

३)   भारतेन्दु युगीन महाभारत धारा के पौराणिक नाटक --

'महाभारत' भारतीय संस्कृति का एक अति विशाल ग्रंथ है। 'महाभारत इतिहास है, काव्य है, स्मृति है, आचार शास्त्र - धर्मशास्त्र है और जो कुछ भी शास्त्र शब्द की परिधि में आ सकता है, वह सब कुछ इसमें समाविष्ट है।'[२] महाभारत के आख्यान, उपाख्यान को लेकर अनेक नाटकों की रचना हुई हैं।

महाभारत के आदिपर्व में वर्णित कथा आख्यानों में कच-देवयानी का आख्यान प्रसिध्द है। श्री रामस्वरूप रूप चतुर्वेदी कृत 'देवी - देवयानी' नाटक है। तारा वाजपेयी लिखित 'देवयानी' नाटक युगीन विशेषताओं से

---

१   डॉ.देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.१२१।
२   डॉ.शशी प्रभा शास्त्री - हिन्दी के पौराणिक नाटकोंका मूलस्रोत-पृ.३४

संपन्न हैं। सावित्री-सत्यवान कथा को लेकर भारतेंदु का 'सती- प्रताप', बाबू कन्हैयालाल लिखित 'शील - सावित्री', गंगाप्रसाद अरोडा का 'सावित्री सत्यवान' नाटक लिखे हैं।

द्रौपदी स्वयंवर की घटना को लेकर ज्वालाप्रसाद नागर का 'द्रौपदी स्वयंवर' प्रभुलाल रॉय का 'द्रौपदी वस्त्रहरण' नाटक है। उदय शंकर भट्ट ने 'विद्रोहिनी अम्बा' महाभारत का 'अम्बोपाख्यानपर्व' के कथानक के आधार पर लिखा है। बद्रीनाथ भट्ट का 'कुरुवनदहन' नाटक सात अंकों में विभाजित है। बाबू जगन्नाथशरण लिखित 'कुरुक्षेत्र' नाटक महाभारत पर आधारित है।

४) <u>भारतेन्दु युगीन कृष्ण धारा के पौराणिक नाटक --</u>

श्रीमद्भागवत प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य का अत्यंत विख्यात ग्रंथ है। 'भक्ति शास्त्र' का यह प्रमाण ग्रंथ माना जाता है। श्रीकृष्ण का चरित्र महाभारत में भी विस्तार से वर्णित हुआ है। कृष्णचरित्र को लेकर पं.राधेश्याम कथावाचक की 'श्रीकृष्ण चरित्र' नाट्यकृति है। 'कंसवध' देवकीनंदन त्रिपाठी का रचित नाटक है। 'श्रीदामा' रामचरण गोस्वामी का नाटक है। कथा का आधार 'श्रीमद्भागवत'[१] है। भाषा सुन्दर है। 'सुदामा' शिवनंदन सहाय का लिखा हुआ नाटक है। इसमें कृष्णद्वारा सुदामा के दारिद्र्य-विमोचन की कथा का आधार लिया गया है।

भारतेन्दु युगीन पौराणिक नाटकों की ओर दृष्टिपात करनेपर इस निष्कर्षपर पहुँचते है इस युग में लीला शैली के नाटक लिखे गये,उनमें नाटकीय उत्कृष्टता कम है। केवल धार्मिक दृष्टिकोण की प्रधानता है। नाटक का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार,चरित्र सुधार ,सत्यनिष्ठा की भावना जगाना।

---

१ डॉ.जोशी बा.ए. - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.११८।

इस युग के नाटकों में पात्रों की भरमार पायी जाती है। 'कुरूवनदहन' भीष्म प्रतिज्ञा में पात्रों की संख्या दो दर्जन के लगभग है।' [१] भारतेन्दु ने शिल्पविधान में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय किया है। अंग्रेजी नाटयशिल्प को ग्रहण किया गया पर संस्कृत शिल्पविधि को भी पूर्णता नहीं छोडा गया।

प्रसाद युगीन पौराणिक नाटक --

जयशंकर प्रसाद नाटक साहित्य को विकसित करनेवाले प्रमुख नाटककार है। 'प्रसाद का आविर्भाव हिन्दी नाटय साहित्य में एक नया अध्याय जोडता है।' [१] हिन्दी के पौराणिक नाटय साहित्य में विशेष योगदान रहा है। 'हिन्दी के पौराणिक नाटकों के विकास में प्रसाद युग अनन्य साधारण महत्त्व रखता है।' [२]

१ - प्रसाद युगीन पुराण धारा के आधार पर पौराणिक नाटक --

इस युग में अनेक मौलिक तथा अनुवादित नाटक लिखे गये, उनका आधार था कथा स्त्रोत पुराण ही था। बाबू श्यामचरण जौहरी का नाटक 'सती सुकन्या' यवन सुकन्या' कथा से लिया गया है। इसी आधार पर 'आदर्श कुमारी' नाटक रामचंद्र भारद्वाज ने लिखा है। इसमें पतिव्रता स्त्री की कथा वर्णित है। ब्रजनंदन शर्मा लिखित 'सत्याग्रही' नाटक में युगीन सामाजिक,राजनीतिक चेतना के संदेश मिलते हैं। पौराणिक कथा नाममात्र है और आधुनिक शासक वर्ग पर भी कडा व्यंग्य किया है। बल्देवप्रसाद खरे कृत 'सत्याग्रही प्रल्हाद' नाटक में गांधीतत्वोंका पुरस्कार किया है। 'देवहुति' श्री राजारामशास्त्री लिखित पौराणिक नाटक है। 'सती दहन' रामगुलाम रसिक बिहारी ने केवळ मनोरंजन के लिए लिखा है। 'वरमाला' नाटक गोविंद वल्लभ पंत ने लिखा है। इस नाटक का आधार

---

१ डॉ.जोशी बा.ए. - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.११८।

२ डॉ.बच्चनसिंह - हिन्दी नाटक - पृ.६१०।

३ डॉ.जोशी बा.ए. - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.२४।

` मार्कण्डेयपुराण` है । नाटकीय शिल्प का सुन्दर आदर्श है ।`[1]

२ - प्रसाद युगीन रामायण धारा के पौराणिक नाटक --

वाल्मीकीय` रामायण`, तुलसीदासजी के` रामचरित मानस ` को आधार बनाकर हिन्दी में अनेक नाटक लिखे गये हैं । ` राम नाटक` दुर्गादत्त पांडे ने लिखा है । इसमें रामलीला का चित्रण किया गया है । आगा हश्र काश्मीरी कृत` सीता वनवास` नाटक मनोरंजन तथा नीति विषयक उपदेश के हेतु है ।` गौतम अहल्या` दुर्गाप्रसाद गुप्त का लिखा हुआ नारी जीवन की गरिमा का नाटक है ।` कर्तव्य` नाटक सेठ गोविंद गोविंददास ने मानवी जीवन में कर्तव्य निष्ठा का महत्व बताने के लिए लिखा है । नाटक में बुध्दिवाद की प्रधानता है । ` मेघनाद` आचार्य चतुरसेन शास्त्री का रचित नाटक है । इसमें मुख्यत: राम के चरित नहीं, मेघनाद` के चरित्र पर विशेष दृष्टि डाली गयी है, फिर भी रामकथा से सम्बध्द कथा है ।

३ - प्रसादयुगीन महाभारत धारा के पौराणिक नाटक --

जयशंकर प्रसाद ने` जनमेयजय का नागयज्ञ ` नामक एक मात्र पौराणिक नाटक लिखा है । ` इस नाटक में प्रसाद ने अपने युग में व्याप्त जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के संघर्षो का रूपायित करने के लिए पौराणिक कथानक और उसके सम्बध्द पात्रों की पुन: रचना की है ।`[2]

मैथिलीशरण गुप्त ने इस युग में` चंद्रहास` तथा` तिलोत्तमा` नाटक लिखें । इन दो नाटकों में सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया है । सुदर्शन ने ` अंजना` नाटक लिखा । सब दृष्टि से सफल नाटक है । विश्वम्भरनाथ शर्मा

---

१ देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.१७३ ।

२ सं.सावित्री सिनहा - हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास - पृ.१६५ ।

' कौशिक ' लिखित ' भीष्म ' नाटक में आदर्श चरित्र का चित्रण है । यह मौलिक नाट्यकृति है । बाबू जगन्नाथशरण लिखित ' कुरुक्षेत्र ' नाटक है । इसका कथानक पूर्णता महाभारत पर आधारित हैं । बद्रीनाथ भट्ट का ' कुरवनदहन ' नाटक है । यह नाटक संस्कृत के वेणीसंहार की सहायता से तैयार किया गया है । ' कृष्णार्जुन युध्द ' नाटक माखनलाल चतुर्वेदी की रचना है । यह सुन्दर साहित्यिक नाटक है और अभिनेय गुणों से परिपूर्ण है । इसमें न कहीं शृंगारिकता है और न अतिरंजन । ' [१]

४ - प्रसाद युगीन कृष्ण धारा के पौराणिक नाटक --

इस युग में कृष्णचरित्र पर आधारित अनेक नाटक लिखे गये हैं । राधेश्याम कथावाचक की ' कृष्णावतार ' नाटयकृति है । इसमें कृष्णचरित्र का उदात्त आदर्श बनाकर कृष्णभक्ति का प्रसार करने हेतु लिखा है । ' रूक्मिणी मंगल ' भी इनका नाटक है । ' श्रीकृष्ण सुदामा ' हरिनाथ व्यास लिखित एक सामान्य नाटक है । बलवन्तराव शिन्दे लिखित ' उषा नाटक ' में उषा अनिरुध्द की प्रेमकथा है । पं. ईश्वरीप्रसाद शर्मा कृत ' मानमर्दन ' नाटक की रूक्मिणी आधुनिक नारी के रूप में चित्रित है ।

' मानमर्दन ' नाटक की रूक्मिणी के चरित्र में आधुनिक स्वाभीमानी स्वतंत्र नारीका व्यक्तित्व प्रकट हुआ है । ' [२]

उपर्युक्त समस्त प्रसाद युगीन पौराणिक नाटकों को देखनेपर यह स्पष्ट होता है कि इस युग के पौराणिक नाटकों में नाटककारों ने पौराणिक कथा का आधार लेकर युगीन समस्याओं का चित्रण किया है ।

---

१ डॉ. शशिप्रभा शास्त्री - हिन्दी के पौराणिक नाटकों के मूलस्त्रोत - पृ.३११ ।

२ डॉ. जोशी बा.ए. - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.२६ ।

प्रसादयुगीन नाटकों में नाटय संघर्ष ,कलात्मकता,राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक उत्थान की प्रेरणा देने का कार्य दिखाई देता है । ` प्रसाद युग को हिन्दी नाटकों का स्वर्णयुग मानना उचित होगा ।' [१]

प्रसादोत्तर युगीन पौराणिक नाटक --

सन १९३४ के आसपास प्रसादयुग की प्रवृत्तियों का लोप होने लगा । पाश्चात्य सभ्यता एवं साहित्य का प्रभाव हिन्दी नाटककारोंपर होने लगा । इसका परिणाम स्वरूप इस युग के नाटककारों ने पौराणिक कथाओं में वर्तमान समस्याओंका ही चित्रण करने लगे । डॉ.देवर्षि सनाढय कहते है --` अनेक पौराणिक घटनाओं को नवीन मानवतावादी दृष्टिकोण से देखा । अनेक नाटकों में पौराणिक चरित्र देवता भाव से मानव भावपर उतर आए ।` [२]

पौराणिक कथावस्तु के आधारपर इस युग के पौराणिक नाटकों के निम्नलिखित रूप में विभाजन कर सकते है ।

१ -- प्रसादोत्तर युगीन पुराणधारा के पौराणिक नाटक --

पुराणों से कथा लेकर प्रसादोत्तर युग में कई नाटक लिखे गये हैं । बालकृष्ण भट्ट जी का ` वेणुसंवाद' संक्षिप्त नाटक है । इसमें राष्ट्रीय चेतना युगानुरूप प्रस्तुत की गई है । प्रसादोत्तर युग में उदयशंकर भट्ट के ` सगर विजय ` नाटक नायक सूर्यवंशी राजा सगर के चरित्र में माता विशालाक्षि के प्रति अनन्य साधारण प्रेमभाव के साथ देश रक्षा विषयक कर्तव्य का सुन्दर अंकन किया गया है । गोविंद वल्लभ पंत ने` ययाति ` नाटक में खाद्यान्न की समस्या सुलझाने का प्रयास किया है । लक्ष्मण स्वरूप लिखित` नल-दमयन्ती `

---

१ डॉ.जोशी बा.ए. - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.२७ ।

२ डॉ.देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक- पृ.१७६ ।

नाटक प्रेम कथा का साधारण नाटक है । ` श्रीशुक ` प्रभुदत्त ब्रह्मचारी लिखित नाटक की कथा भागवत, नारद पुराण से प्राप्त होती है । श्री हरिशंकर सिनहा द्वारा लिखित नाटक ` माँ दुर्गे ` की कथा स्कंद पुराण तथा वायु पुराण पर आधारित है । ` देवयानी ` श्रीमती तारा मिश्रा का सुन्दर नाटक है । लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा लिखित ` नादर की वीणा ` नाटक है । देवी भागवत में वर्णित नर और प्रल्हाद के युध्द के आधार पर नाटक का कथानक है ।

२ -- प्रसादोत्तर युगीन रामायण धारा के पौराणिक नाटक --

वाल्मीकीय ` रामायण ` तथा तुलसीदास कृत ` रामचरित्रमानस ` पर आधारित अनेक पौराणिक नाटक लिखे गये हैं । सेठ गोविंददास ने ` कर्तव्य ` (पूर्वाध्दं) नाटक रामचरित को ध्यान में रखकर लिखा है । नाटक में नाटककार ने कर्तव्य पालन के आदर्श की स्थापना की है । ` मेघनाद ` नाटक की रचना आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने की है । इस में मेघनाद का चरित्र है जिसका सम्बन्ध रामकथा से है । ` उर्मिला ` नाटक पं.पृथ्वीनाथ शर्मा ने लिखा । इसमें चिर दुखिनी उर्मिला का जीवन चित्रित किया है । ` प्रयाग रामगमन ` बदरीनारायण प्रेमधन जी का एक छोटासा रूपक है । ` इसमें भगवती गंगा, वन, त्रिवेणी संगम और भारद्वाजाश्रम का वर्णन किया गया है, वह अति मनोरम है ।[१] देवराज दिनेश के ` रावण ` नाटक में भारत - पाकिस्तान विभाजन पूर्व परिस्थिति का चित्रण मिलता है । सीताराम चतुर्वेदी का शबरी गौरीशंकर मिश्र का ` शबरी अछूत ` तथा सेठ गोविंद दास का ` शबरी ` इत्यादि नाटक मिलते हैं ।

३ -- प्रसादोत्तर युगीन महाभारत धारा के पौराणिक नाटक --

प्रसादोत्तर काल में महाभारत के आधार पर कई नाटक लिखे गये हैं ।

---

१ डॉ.शशिप्रभा शास्त्री - हिन्दी के पौराणिक नाटकों के मूलस्त्रोत -- पृ.३५४ ।

` कर्ण ` १९४३ ई में सेठ गोविंददास ने लिखा है । इसमें कर्ण को लेकर सामाजिक समस्याओं पर दृष्टिपात किया है । ` पुराण कथा में सामाजिक प्रश्नों को देखने का ` कर्ण ` एक अच्छा प्रयत्न है ।[१] पाण्डेय बेचन शर्मा कृत ` गंगा का बेटा ` नाटक की कथावस्तु महाभारत में वर्णित शापित गंगा और भीष्म की कथा है । ` विद्रोहिनी अम्बा ` की रचना उदयशंकर भट्ट ने की है । जागृत नारीका पुरूषों के अत्याचारों के प्रति विद्रोह नाटक का उद्देश्य है । ` कर्ण कुन्ती संवाद ` धन्यकुमार जैन द्वारा रचित नाट्य काव्य है । ` चक्रव्यूह ` लक्ष्मीनारायण मिश्र का १९५४ ई.में प्रकाशित नाटक है । इसमें पौराणिक कथा को बुध्दिसंगत रूप दिया है । ` स्वर्ग भूमि का यात्री ` रांगेय राघव द्वारा लिखित नाटक है । महाभारत के अंतिम घटनाओं पर इस नाटक की रचना की है । नाटक का मुख्य उद्देश्य है स्वर्ग पाने के लिए मनुष्य को क्या क्या करना चाहिए ।

४ -- प्रसादोत्तर युगीन कृष्णधारा के पौराणिक नाटक --

प्रसादोत्तर युग में कृष्ण चरित्र तथा कृष्ण चरित्र से सम्बन्धित घटनाओं को लेकर कुछ नाटक लिखे गये ।

ठाकुर भरतसिंह यादवाचार्य लिखित ` श्रीकृष्ण जन्म नाटक ` (१९३४ ई) संक्षिप्त नाटक है । ` राधाकृष्ण ` आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखा हुआ नाटक है । इसमें राधा-कृष्ण के प्रेम संबंध को प्रस्तुत करनेवाला नाटक है । ` उषा अनिरूध्द ` मुन्शी आरजू साहब का नाटक है । कथा चिरपरिचित है । किंतु प्रस्तुती करण में नवीनता है । १९५१ ई.में प्रकाशित एम.ए. चतुर्वेदी का ` श्रीकृष्ण ` सफल अभिनेय लघु नाटक है । सरल,सुन्दर भाषा में लिखा हुआ नाटक है ।

हिन्दी में जो पौराणिक नाटक लिखे गये, उनका अध्ययन करने के उपरांत

---

१ डॉ.देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.१९७ ।

स्पष्टता से दिखाई देता है कि पौराणिक नाटकों के माध्यम से वीरपूजा, शक्तिपूजा, धर्म का प्रसार भारतीय संस्कृति और सभ्यता का उत्थान करना है।

पौराणिक चरित्र सामान्य बनकर जन-सामान्य में विचरन करने लगें। नाटककारों ने देवताओं और मनुष्यों में जो अंतर था, वह समाप्त कर दिया। `पौराणिक कथाओं को तर्क संमत दृष्टि से देखने के कारण इस युग के पौराणिक नाटककारों ने हमें जीवन की व्यापकता और विशालता का संदेश दिया है।'[१]

---

१ डॉ. देवर्षि सनाढ्य - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.२९३।